



लवङ्गपत्रं ॥ ॥ नन्दिकं
शुद्धं वनाय यूष्यं लज्जनसम
र्यायामि ॥ नाहिय ॥ चतनति
य ॥ स्थानकुर्या ॥ स्थानकं लख
जादकं ॥ पूर्ववधीसूर्यायैवा
य ॥ माहाभ्यकात्रायादि ॥ गु
ननमस्कात्र ॥ न्यास ॥ ॥ ॐ
निविद्याश्रुतायै रुद्र ॥ ॐ शं
रुद्रयाय नमः ॥ ॐ म
क्रियाय मित्रसंस्वाहा ॥ ॐ
गं रुद्राय मिषायै वीषट् ॥ ॐ
श्रुतीभयकवचायै ॥ ॐ
युधुक् क्रियायै ॥ ॐ
ॐ निविद्याय श्रुतायै रुद्र
॥ कर्ता न्यास ॥ ॥ ॐ
युक्ता ॥ ॐ गंगायै नमः
ॐ यमनायै नमः ॥ ॐ शम्भु
वैद्यै नमः ॥ ॐ सनत्कुमारै नमः

ॐ नर्मदायै नमः ॥
ॐ सिन्धवे नमः ॥
ॐ काव्यै नमः ॥
श्रावहनादिचन्दनायै
यूष्यं नमः ॥ ॥ धनूमूढां द
त ॥ शार्ङ्गसिंहनां ॥ श्रुतया
लंखनसकलरुनंदाय ॥ ॥
ॐ श्रुतविजयविशवा सर्ववि
र्द्धिगतायै वा ॥ यः ॥ स
लुलीकायै सवाङ्मयै नमः
ॐ वि ॥ ॥ तं गी कल
नं ॥ ॐ समुद्रकलसायै नमः
ॐ श्रुतश्रुतीभयनीमकिस
हिताय गद्ययथादिसांगायै
सगद्ययत्रिवात्रायै ॥ ॐ दमा
नं नमः ॥ यूष्यं नमः ॥ ॥ ॐ
दात्रायै नमः ॥ ॥ ॐ नन्दिनं नमः
ॐ माहाकालायै नमः ॥

ॐ नमो नमः ॥
 ॐ गद्यतय नमः ॥
 ॐ वृषाय नमः ॥
 ॐ सुन्दार्य नमः ॥
 ॐ देवी नमः ॥
 ॐ चक्षुष्य नमः ॥
 ॐ सुमंगलदा लाय नमः ॥
 ॐ सुहावदा लाय नमः ॥
 ॐ सुखदा लाय नमः ॥
 ॐ मंगलदा लाय नमः ॥
 ॐ सुखदा लाय नमः ॥
 ॐ वाहनादि ॥ दात्रात्र नवि
 रक्षत सर्व विधि यत्रियूर नमः ॥
 ॐ निदा लयूजा ॥
 तथा आसनं ॥
 ॐ आधीनामक नमः ॥
 ॐ अनन्तासनाय नमः ॥
 ॐ सुन्दार्य नमः ॥
 ॐ श्रीकृष्णाय नमः ॥

ॐ नाराय नमः ॥
 ॐ यद्वाय नमः ॥
 ॐ यशाय नमः ॥
 ॐ कृष्णाय नमः ॥
 ॐ कर्णिकाय नमः ॥
 ॐ धर्माय नमः ॥
 ॐ दानाय नमः ॥
 ॐ वेदाय नमः ॥
 ॐ नमो यय नमः ॥
 ॐ अधर्माय नमः ॥
 ॐ श्रीकृष्णाय नमः ॥
 ॐ श्रीवैनाय नमः ॥
 ॐ श्रीनमो यय नमः ॥
 तथा आवाहनादि चन्दनाद
 दयूष्य नमः ॥ ॥ ॐ सुखं ज
 येमहादवन्ति त्रिजा सहमा
 दिता श्रीमिन्नुजा विधे नन
 समागच्छ महेश्वर ॥ आगच्छ
 शशाहा ॥ ॥ ॐ वृषासनाय

नमः॥ ॐ सिंहनाथ नमः॥
तथा ध्यान॥ ॥ ॐ वृषसिंह
तं देवं हिमकुन्देन्दुसन्निह
उकेवकुं विनयं च उरु उज्जम
हम्भर्ता॥ विभूलाकथनं देवं
वलाकनसधनिहं। वामात्र
संगतांदवी दिउजांकलम्भ
वत्रा॥ हमा हत्रहा रूषा नीस्थ
तामत्र विरूषितं। उवा मती
ध्वनी ध्याना सर्वपापयना
मिनी॥ ॐ संसृष्ट कलम्भय
ममं जयाय श्रीमती ध्वनी
किं हि नाय ध्यानपूष्यं नमः॥
४॥ ७ ॥ * ॥

तग ४ यूजन ४॥
ॐ वृषरुख जाय नमः॥
ॐ गगनार्थ नमः॥
ॐ यमनाथ नमः॥
ॐ नमोदाय नमः॥

ॐ काव्यार्थ नमः॥
ॐ स्रस्वार्थ नमः॥
ॐ सुनंद नमः॥
ॐ कोमल नमः॥
ॐ गद्यार्थ नमः॥
ॐ वाग्वार्थ नमः॥
श्रीवाहनोदिवन्दनाकनय
थ नमः॥

तग ४ यूजन ॥
ॐ कान्तसमूदाय नमः॥
ॐ कीर्तनसमूदाय नमः॥
ॐ दक्षिणसमूदाय नमः॥
ॐ सुखसमूदाय नमः॥
ॐ ॐ कृतसमूदाय नमः॥
ॐ सुनासमूदाय नमः॥
ॐ दहदिकसमूदाय नमः॥
ॐ सक्तसमूदाय नमः॥
ॐ जम्बूद्वीपाय नमः॥
ॐ भक्तद्वीपाय नमः॥

ॐ कू म दी पाय नमः॥
ॐ कू व दी पाय नमः॥
ॐ यु क दी पाय नमः॥
ॐ र म म धे दी पाय नमः॥
ॐ यू क ल दी पाय नमः॥
ॐ स क दी ध र्पा नमः॥
ॐ त लाय नमः॥
ॐ नि त लाय नमः॥
ॐ सू त लाय नमः॥
ॐ वि त लाय नमः॥
ॐ त ल त लाय नमः॥
ॐ न स त लाय नमः॥
ॐ या त लाय नमः॥
ॐ स क या त ल र्पा नमः॥
ॐ ह व ला का य नमः॥
ॐ उ व ला का य नमः॥
ॐ स ला का य नमः॥
ॐ म ह ला का य नमः॥

ॐ ऊ न ला का य नमः॥
ॐ त प ला का य नमः॥
ॐ स ग्य ला का य नमः॥
ॐ स क ला क थानमः॥
श्री वा ह ना दि चं द ना कृत नमः॥
ॐ कृत यू ग य नमः॥
ॐ उ ना यू ग य नमः॥
ॐ द्वा य न रू ग य नमः॥
ॐ क लि रू ग य नमः॥
ॐ उ उ यू ग य नमः॥
श्री वा ह ना दि चं द ना कृत नमः॥
ॐ म र्ग व दाय नमः॥
ॐ य र्ग व दाय नमः॥
ॐ स म व दाय नमः॥
ॐ मू थ र्ग व दाय नमः॥
ॐ उ उ र्ग व दाय नमः॥
श्री वा ह ना दि चं द ना कृत नमः॥
ॐ श्री दि षा दि न व य ह र्पा कू
द मा स न नमः॥ यू यं नमः॥

ॐ श्रीदिग्या नमः ॥

ॐ श्रीमाय नमः ॥

ॐ श्रीजीवाय नमः ॥

ॐ वृक्षाय नमः ॥

ॐ वृहस्पतये नमः ॥

ॐ शुक्राय नमः ॥

ॐ मनोभ्यः नमः ॥

ॐ ग्राहवे नमः ॥

ॐ कर्तवे नमः ॥

ॐ ऊर्ध्ववे नमः ॥

श्रीवाहनादिवन्दनाकृतं नमः ॥

ॐ ॐ ह्यय नमः ॥

ॐ अग्नये नमः ॥

ॐ यमाय नमः ॥

ॐ नमोभ्यः नमः ॥

ॐ वृक्षाय नमः ॥

ॐ वायवे नमः ॥

ॐ नमोभ्यः नमः ॥

ॐ ॐ श्रीभूनाय नमः ॥

ॐ श्रीभूतये नमः ॥

ॐ उर्ध्वये नमः ॥

ॐ ॐ ह्यदिदं भूलाके पाशे

श्रीवाहनादिवन्दनाकृतः

यूषां नमः ॥ ० ॥ ७ ॥

नमोभ्यः भूलाके पाशे पूजा ॥

ॐ गद्ययतये नमः ॥

ॐ दूर्गाय नमः ॥

ॐ वायवे नमः ॥

ॐ श्रीकाभ्यः नमः ॥

ॐ श्रीविदिकुमाराय नमः ॥

श्रीवाहनादिवन्दनाकृतं नमः ॥

ॐ यंच वक्रसदा भिवाय ॐ दमा

सुनं नमः ॥

ॐ सशोभाय नमः ॥

ॐ वामदेवाय नमः ॥

ॐ श्रीधाय नमः ॥

ॐ नमोभ्यः नमः ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥
ॐ पंचवक्त्रसदाशिवाय श्रीवा
हनादिवन्द्यकृतयूष्यं नमः ॥
ॐ श्री ह्ये नमः ॥
ॐ ध्रुवाय नमः ॥
ॐ सामाय नमः ॥
ॐ विष्णवे नमः ॥
ॐ श्रीनिताय नमः ॥
ॐ मूललाय नमः ॥
ॐ यगुषाय नमः ॥
ॐ यक्षिणाय नमः ॥
ॐ श्रीवसुधाय नमः ॥ श्रीवा
हनादिवन्द्यकृतयूष्यं नमः ॥
ॐ श्रीजकपादाय नमः ॥
ॐ श्रीहृदयाय नमः ॥
ॐ विष्णुपात्राय नमः ॥
ॐ हनाय नमः ॥
ॐ वदुषाय नमः ॥
ॐ श्रीमहाकाय नमः ॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ सावित्रि नमः ॥
ॐ पिनाकि नमः ॥
ॐ अयंकि नमः ॥
ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ उकादमरुदणाय नमः ॥
श्रीवाहनादिवन्द्यकृतयूष्यं नमः ॥
ॐ श्रीजकपादाय नमः ॥
ॐ ध्रुवाय नमः ॥
ॐ ह्ये नमः ॥
ॐ यगुषाय नमः ॥
ॐ यक्षिणाय नमः ॥
ॐ श्रीवसुधाय नमः ॥
ॐ श्रीमूललाय नमः ॥
ॐ श्रीमहाकाय नमः ॥
ॐ श्रीहृदयाय नमः ॥
ॐ विष्णुपात्राय नमः ॥
ॐ हनाय नमः ॥
ॐ वदुषाय नमः ॥
ॐ श्रीमहाकाय नमः ॥

ॐ द्वादशदिश्याय नमः॥
श्रीवाहनादिवन्द्यनाकृतनमः॥

ॐ श्रवणमासाय नमः॥

ॐ वल्लभाय नमः॥

ॐ व्यासाय नमः॥

ॐ हनुमताय नमः॥

ॐ विहीरुनाय नमः॥

ॐ कृपाय नमः॥

ॐ यत्रशुभमाय नमः॥

ॐ मार्कण्डेयाय नमः॥ ६

ॐ श्रुतिवित्रंजीवीत्याय नमः॥

श्रीवाहनादिवन्द्यनाकृतनमः॥

ॐ कार्तिकमासाय नमः॥

ॐ मार्गशिरमासाय नमः॥

ॐ चैत्रमासाय नमः॥

ॐ माघमासाय नमः॥

ॐ शुक्लमासाय नमः॥

ॐ मृगशिरमासाय नमः॥

ॐ पुष्यमासाय नमः॥

ॐ अश्लेषमासाय नमः॥

ॐ आषाढमासाय नमः॥

ॐ श्रवणमासाय नमः॥

ॐ आश्विनमासाय नमः॥

ॐ कार्तिकमासाय नमः॥

ॐ मकरमासाय नमः॥

ॐ कुम्भमासाय नमः॥

ॐ मेषमासाय नमः॥

श्रीवाहनादिवन्द्यनाकृतनमः॥

ॐ वसुमासाय नमः॥

ॐ मीनमासाय नमः॥

ॐ वृषमासाय नमः॥

ॐ मृगशिरमासाय नमः॥

ॐ पुष्यमासाय नमः॥

ॐ अश्लेषमासाय नमः॥

ॐ आषाढमासाय नमः॥

ॐ श्रवणमासाय नमः॥

ॐ आश्विनमासाय नमः॥

श्रीवाहनादिवन्द्यनाकृतनमः॥

ॐ कार्तिकमासाय नमः॥

ॐ मकरमासाय नमः॥

ॐ कुम्भमासाय नमः॥

ॐ कृतीयाये नमः॥
ॐ चरथे नमः॥
ॐ यक्ष्मणे नमः॥
ॐ यक्ष्मणे नमः॥
ॐ सफ्मणे नमः॥
ॐ श्रुमणे नमः॥
ॐ नवमणे नमः॥
ॐ दममणे नमः॥
ॐ कादमणे नमः॥
ॐ द्वादमणे नमः॥
ॐ त्रयोदमणे नमः॥
ॐ चतुर्दमणे नमः॥
ॐ पूर्णमणे नमः॥
ॐ श्रुमावामणे नमः॥
ॐ यचदमणिथिखानमः॥
ॐ श्रुवाहना दिवचनाकृतनमः॥
ॐ श्रुमिने नमः॥
ॐ त्रैलोक्ये नमः॥

ॐ कृत्तिकाये नमः॥
ॐ त्रिहिरे नमः॥
ॐ मगमित्रनमः॥
ॐ श्रुद्रये नमः॥
ॐ यनवसे नमः॥
ॐ येषाये नमः॥
ॐ श्रुत्तमाये नमः॥
ॐ मद्याये नमः॥
ॐ यूर्ध्वलुके नमः॥
ॐ उर्ध्वलुके नमः॥
ॐ हस्ताये नमः॥
ॐ चिन्ताये नमः॥
ॐ स्वाये नमः॥
ॐ विमलाये नमः॥
ॐ श्रुनृताये नमः॥
ॐ मृगाये नमः॥
ॐ मृताये नमः॥
ॐ यूर्ध्ववाताये नमः॥

ॐ उ र्ध्वादाये नमः ॥
ॐ अतिरिक्ते नमः ॥
ॐ अवधाय नमः ॥
ॐ धनदाय नमः ॥
ॐ भगवति नमः ॥
ॐ पूर्वरात्राय नमः ॥
ॐ उ र्ध्वरात्राय नमः ॥
ॐ नवमे नमः ॥
ॐ अष्टाविंशति नक्षत्राय नमः ॥
ॐ आवाहनादियं नक्षत्रं नमः ॥
ॐ विष्णुमाय नमः ॥
ॐ योग्ये नमः ॥
ॐ आयुष्माय नमः ॥
ॐ सोमरात्राय नमः ॥
ॐ रश्मिनाय नमः ॥
ॐ अतिगद्युमाय नमः ॥
ॐ सुकम्पने नमः ॥
ॐ धृतये नमः ॥
ॐ मूलाय नमः ॥

ॐ गद्युमाय नमः ॥
ॐ वृद्धये नमः ॥
ॐ अवाय नमः ॥
ॐ व्याघाताय नमः ॥
ॐ हर्षदाय नमः ॥
ॐ वज्राय नमः ॥
ॐ मुद्राय नमः ॥
ॐ अतिपाताय नमः ॥
ॐ वलियानाय नमः ॥
ॐ यत्रिद्याय नमः ॥
ॐ मित्राय नमः ॥
ॐ सिद्धये नमः ॥
ॐ साक्षाय नमः ॥
ॐ मुद्राय नमः ॥
ॐ मुद्राय नमः ॥
ॐ अक्षये नमः ॥
ॐ अक्षये नमः ॥
ॐ वैद्यनाथाय नमः ॥
ॐ अष्टाविंशति नक्षत्राय नमः ॥
ॐ आवाहनादियं नक्षत्रं नमः ॥

ॐ मधाय नमः ॥
 ॐ रुषाय नमः ॥
 ॐ मिथुनाय नमः ॥
 ॐ कर्कटाय नमः
 ॐ सिंहाय नमः ॥
 ॐ कन्याय नमः ॥
 ॐ तुलाय नमः ॥
 ॐ विष्णुनाय नमः ॥
 ॐ धनूषाय नमः ॥
 ॐ मकराय नमः ॥
 ॐ कुम्भाय नमः ॥
 ॐ मीनाय नमः ॥

ॐ मघादिद्वादश राशित्वाय नमः
 आवाहनादिवन्द्यै नमः ॥
 नमः ॥ ॥ कलम्बुन विरधत
 सुर्वविधियत्रियुर्धुमस्तु ॥ ॥
 ॐ तिकलम्बुन विरधतसर्व
 विधियत्रियुर्धुमस्तु ॥ ७ ॥

नमो हस्तयुक्ता ॥
 ॐ अस्त्रस्त्रमाशु विनंजीवी
 त्वं देमासनं नमः ॥
 ॥ ॥ आधनादि ॥ ॥ ॥ ॥
 रधोतयमासनासीनं रधतवर्धु
 चउर्जं अरुयुक्तवहसंचव
 नारुयं रधाय नमः ॥ ॥ ॥
 नयथा नमः ॥ ॥ ॥
 पामिषि देवताय हि नमः ॥
 ह्युयधि देवताय नमः ॥

ॐ अस्त्रस्त्रमाशु नमः ॥
 ॐ वलय नमः ॥
 ॐ व्यासाय नमः ॥
 ॐ हनुमताय नमः ॥
 ॐ विहीषधाय नमः ॥
 ॐ रुषाय नमः ॥
 ॐ यत्रभुतामाय नमः ॥
 ॐ मार्कण्डेयाय नमः ॥
 ॐ चउमस नमः ॥
 ॐ ॐ दुर्वे नमः ॥

ॐ कृष्ण वाय नमः ॥

ॐ विष्णु वाय नमः ॥

ॐ श्रीगणेश वाय नमः ॥

ॐ भुवनाय वाय नमः ॥

ॐ मंगलाय वाय नमः ॥

ॐ नृकृपाय वाय नमः ॥

ॐ ओषधीनाय वाय नमः ॥

ॐ निम्बकनाय वाय नमः ॥

ॐ शूद्राय वाय नमः ॥

ॐ ऊवांशिकाय वाय नमः ॥

ॐ सामाय वाय नमः ॥

ॐ मृगांकाय वाय नमः ॥

ॐ ताराधियतय वाय नमः ॥

ॐ द्विजराधियतय वाय नमः ॥

ॐ धादय वाय नमः ॥

शुक्लकामाशुचित्रं जीवीत्याः

गले चैः विप्रियत्रियुर्लुमः ॥

श्रीवाहनादि नमः ॥

गंगावर्णाक्ष्णी ॥

श्रीदामादि ॥

ॐ युगलनाय नमः ॥

न॥ ॐ यतासु नहि तंदवं नीलव

र्णुकवकुकां शिखरं वृद्धं दवं

स्वर्गं हृत्कधनकां मृगुहाज

हिरुषा श्रीं ध्यातव्यं कुरुयात्तु

॥ ॐ कुरुयात्ताय ध्यातव्यं नमः

॥ ॥ ॐ कुरुयात्ताय नमः ॥

ॐ महाहैनवाय नमः ॥

ॐ दवदवाय नमः ॥

ॐ श्रीमितामैहैनवाय नमः ॥

ॐ नृगहैनवाय नमः ॥

ॐ नृगहैनवाय नमः ॥

ॐ ऊवांशिकाय वाय नमः ॥

ॐ उन्मर्हैनवाय नमः ॥

ॐ कगलैनवाय नमः ॥

ॐ लीषनैनवाय नमः ॥

ॐ सहात्रैनवाय नमः ॥

ॐ नृदमूर्धन्य नमः ॥

ॐ नृसिंहमहाहैनवाय नमः ॥

ॐ सक्तानैकेश्यालाय नमः ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ श्री नमः ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ५५ ॥

ॐ यद्वा सनाय नमः॥

ॐ नमः॥ ॐ वसुधैवा कुटुम्बकम्॥
वसुधैवा कुटुम्बकम्॥ यत्तु यत्तु
कदापि नमामि त्वां यत्तु यत्तु॥

ॐ नमः॥

ॐ वसुधैवा कुटुम्बकम्॥

ॐ जाता विरुद्धं यत्तु नमः॥

ॐ कदापि विरुद्धं यत्तु नमः॥

ॐ वाहनादि चन्दनं यत्तु नमः॥

ॐ जाता विरुद्धं यत्तु नमः॥

ॐ विरुद्धं यत्तु नमः॥

ॐ वाहनादि चन्दनं यत्तु नमः॥

ॐ सूर्याय नमः॥

ॐ गङ्गाय नमः॥

ॐ यत्तु यत्तु नमः॥

ॐ जाता विरुद्धं यत्तु नमः॥

ॐ कदापि विरुद्धं यत्तु नमः॥

ॐ वसुधैवा कुटुम्बकम्॥

ॐ जाता विरुद्धं यत्तु नमः॥

ॐ वसुधैवा कुटुम्बकम्॥

यत्तु यत्तु नमः॥
ॐ वाहनादि चन्दनं यत्तु नमः॥
ॐ जाता विरुद्धं यत्तु नमः॥
ॐ कदापि विरुद्धं यत्तु नमः॥
ॐ वसुधैवा कुटुम्बकम्॥

ॐ नमः॥

ॐ नमः॥

ॐ साधनाय नमः॥
ॐ वाहनादि चन्दनं यत्तु नमः॥

ॐ नमः॥

ॐ यत्तु यत्तु नमः॥

ॐ दयाय नमः॥

ॐ यत्तु यत्तु नमः॥

ॐ यत्तु यत्तु नमः॥

ॐ वाहनादि चन्दनं यत्तु नमः॥

ॐ नमः॥

ॐ नमः॥

ॐ विरुद्धं यत्तु नमः॥

ॐ यत्तु यत्तु नमः॥

ॐ नमः॥

ॐ वाहनादि चन्दनं यत्तु नमः॥

ॐ नमः॥

ॐ नमः॥

ॐ नमः॥

ॐ नमः॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यः श्रद्धया नमस्कृत्य
दमासुमं नमः ॥ पूष्यं नमः ॥ हस्तं
च नमः ॥ चंद्रं नमः ॥ यक्ष्मादिभ्यः पूष्यं
नमः ॥ धूष्यं ॥ दिप्यं ॥ अर्धुमं कनर्यं ॥
अर्धुगं च नमः ॥ ॐ ॥ धनसाति
कपूलीकविश्वं ॥ भांकि नमः ॥ २ ॥
पूली नमः ॥ ३ ॥ धनऊधकर्मस
वा नमः ॥ मामनवृयकां वः मिश्र
थादिन ॥ कीनं लासा नमः ॥
कायतिशं ॥ तय ॥ स्वस्ति वाच न
पदयाव ॥ ॥ निर्मळुनयाचका
ॐ प्रायं पापवत् ॥ अनित्यं सर्वपाप
क्रयाय च लक्ष्मीर्दृष्टिं कर्तुं नित्यं
निर्मळुदं कर्तुं नमः ॥ च नमः ॥
जासमटं तय ॥ कवी ॥ संखवा ॥
ममसं तय क ॥ मिश्रला ॥ वलवाति
जामगं पिखा तं खूषवाच कलका
या ॥ अर्धपात संखनमावाया तद
यः पूषिकस्थान नमः ॥ यागद्वय
क ॥ कतसादि सकलिनः कतनद

कः स्वानतनका॥ थकादिने चक
नः मामेनः॥ॐ सम्युक्तलगायसु
एकजायश्रुमतीस्वनीमर्किभाहि
ताय गवय ग्यादिसांगयसगधय
त्रिवागायः॥ दमासनं नमः पूर्वा
नमः॥ नवश्रुतं च दनः सिद्धः॥ ज
क्षीपवीतस्य नमः॥ धूप॥ दिय॥
रुसतां वलः नवद्यादिः सकर्षासि
द्धिं नमु॥ ॥ मधुलसा॥ ॐ
ॐ नमः सम्युक्तलगायसुर्किने
दवतानाः सकलसुलनदीतीर्थगंगा
दिगायः॥ यूरुगनीषधीरि॥ रुलक
सुमयुने॥ रुगसं सवेन॥ विद्याः
नाथं सहस्रं कनूखविषदुनः सर्व
जहं यसक्तं नवन्दकूमरूपः निवसि
तिसकलः मगलं मगलानां॥ अल
हामावसिवासः हनुमानाविलीय
दाशरुवसं यनयुनामथः मार्कण्डे
त्यथेवच॥ विश्वनाथवीनायवि
श्वनाथाय नमः॥ सर्वविघ्नहर्द

कः सर्वभार्तिनमाभुन॥ निर्या
नदयनं भाकं निष्कलकनिगाम
यां कामातीतयनं गून्मः हेनवनेन
मामाहं॥ ॥ नमस्तु कपिलदवी
नमस्तु सूनयुजित॥ यविशं सर्वदा
धनः युजितेन नमामाहं॥ कोमा
नीमयुना वृटाः नकाजीनकवाभ
नी॥ मस्तु विन्दुमूडाचः एवमथ
नीनमाभुन॥ कार्याका गदासर्व
सांभतालं यनमावनी लक्ष्मीसक
तिसोलागधः दायिनिचनमामाहं॥
रुदवनमामुखं कलदवनमा
नमः॥ स्कानदवयहा॥ सर्वयुजां
गुह्यनमाभुन॥ यथावानयहा
सांवाक्य॥ अगम्ययुषाधुपदीप
श्रुतविधितस्तुर्वविधियनिष्क
नमस्तु॥ ॥ मधुसदाहस्वाननथ
काठिमाचां कुचका॥ मधुनवित
रुयायक॥ थनेमिसाथकाठिनः
मतरुतादवासरुधमिभुं लंकड
कायाचायकः स्वस्तिवाचनयउया

ॐ लुट्टिचकः अलुट्टिचकः
॥ यलुट्टिचकः नलुट्टिचकः ॥ मिथकः
दिनः श्रीगणेशलोकतचकः ॥ मा
याधलयंचग्रसेयाचकः ॥

ॐ व्याधाय स्वाहा ॥

ॐ अयाधाय स्वाहा ॥

ॐ व्याधाय स्वाहा ॥

ॐ उदाधाय स्वाहा ॥

ॐ समाधाय स्वाहा ॥

माचानासिचकः ॥ द्वाधाय श्रीग
नः कृपातयावकलंखसवाचकः
काय ॥ धनलि ॥ मिश्रनसाः ऊवद
सयातसनामकनः मिश्राश्रय
खवदसयातसनामकनः ॥ ध
ॐ २ सद्गार्थः कश्चिदियुजावात्रि
यादकिष्ठातयः सिचूयावृष्टियः
वाचनकायः न्यासलिकायः क
सगविमर्जनयाय ॥ सूर्यासादि
थय ॥ वाक्यादाव ॥ धकादिया
~~काय~~ द्वाधानकसक

नतयावः कलंगवृष्टिचकवियः
मः सिद्धनः स्वयुधः श्रीसिद्धिदवि
य ॥ मावाग्वनीदननतिचकः ॥ सि
रुश्रानतिप्रथिर्हः धंकाठिनः जी
सिनंगासहा ॥ धकाठिनकस
कनसीय ॥ यूर्ध्वचन्द्रनिर्हयस्य
दर्यधंसकृदपीहा ॥ श्रीमविम्वे
वंधश्चसयदायजयायच ॥ ॥

धनलिदंखापिखाकाय ॥ ददन
दाकाकंजीनकः वाचकमामन
वृयकः कातयदाजीः श्रीसूर्याया
नकंननक ॥ कायश्रनसा द्वातया
ऊवसः ॐ लुट्टिचकः नतयाय ॥ मिश्रा
श्रनसाः खडासयायः इदंकाविय
क ॥ धनधूनकायः मामकयाध
ॐ कनहया ॐ स्वकावयः सगुन
वियक ॥ ददवलिशनेसवाचकः
काय ॥ ॥ इतिनामकनकन
नविम्वेसमाफ ॥ ७ ॥ अहं ॥

ॐ नमः॥ निवाया॥ स्वस्ति कूर्यान्मदाविद्यः स्वस्ति नार्हेषु नवचाया गिनी स्वस्ति सर्व
यः स्वस्ति पीठमभ्यर्क्षका॥ १॥ पूर्वदक्षिणतरश्चवः पश्चिमाह नमवचा स्वस्ति सर्व य
उगम्यः पुष्पयुक्तदवता॥ २॥ हे नवीसर्वाः स्वस्ति वाक्साक्ष्या गिनी॥ स्वस्ति व
द्मानविर्विष्णुः स्वस्ति नृपसदाभिया॥ ३॥ विनायकः कूमानचः स्वस्ति मयंसफका॥
स्वस्ति वैलाकपालाभ्यः स्वस्ति नमुनवयाहा॥ ४॥ स्वस्ति तिथयः नक्षत्राः स्वागताभि
स्तथैव च॥ स्वस्ति मासपक्षः स्वस्तिः त्र्यहोनां च वत्सर्गः॥ ५॥ समुद्राः यद्वत्ताः स्वस्तिः
सकलकाः॥ सनीसृयाः स्वस्ति यक्षाश्च गन्धर्वाः॥ यन्मवसवस्तथा॥ ६॥ स्वस्ति वस

मतिभ्यापः तजवायुश्च वासकः॥ ७॥ नृपकृष्णः सदा स्वस्तिः हेतुगममश्च शुचिर्धर्मः॥ ८॥
गिनी स्वस्ति वीर्यः॥ ९॥ कलजाक्षं च त्रिस्तथा॥ स्वस्ति वै दायगः स्वस्तिः गसरथी व्याहृति
स्तथा॥ १०॥ स्वस्ति नाजायुजानां च॥ सन्वानामानवेषु च॥ आवाशायः स्वस्तिः स्व
स्ति यद्वत्सर्वदा॥ ११॥ मंगलाष्टकं वै स्वस्तिः स्वस्ति दवयहृषवायः जमानस्तदा
स्वस्तिः॥ यथास्तु सर्वदवता॥ १२॥ ॐ ति स्वस्ति वाचनः॥ १३॥ एतन्मु सर्वदा नमु॥

ॐ नमः ॥ मिवाय ॥ ४ ॥ श्रीमन्त्यं कज्विस्तु भं हनि हनी वायुर्महं नलः ॥ ५ ॥ दाहा
 स्तुतिविरूपा लवन नृदाय तादिवाल यहा ॥ ४ ॥ यद्यमी न न क्व वल ॥ ४ ॥ सू न गज विन्ताम
 निकोस्तु ॥ ४ ॥ सामम किध न च लाम न धनं कूर्ध्वं कुत मर्जं लं ॥ १ ॥ ॥ ॥ मे त्रिशी नदिदि
 च के ॥ ४ ॥ स ए ग ॥ अति सूर्य सुहाः सा विशी च स न स्व ती च सू न ही स ह्य वृता नृ च ॥ १ ॥
 स्वाहा ॥ ४ ॥ अम्व वती सु नृद ए गिनी ॥ ४ ॥ स्वयं विध्वं मिनीः यलायाम्बु निध ॥ ४ ॥ समी नम
 कला कूर्ध्वं कुत मर्जं लं ॥ २ ॥ ॥ नशाक्षं हृत्यं सुहं पशु पत न त्रिपयं पावनंः वदो

विष्णुपदगयंशीतुवनंक्षातं च त्रामशयं। गंगवाहपथशयं सुविमलं वेदशयं धि
शतं सध्मा नां शितयं द्विजं न विहितं कूर्ध्वं तु तमनीं लो॥ ३॥ वाल्मीककहसनकहस
नातनमूनिवासावसिस्थरुगुः सा वाली यमदग्निज्ज्ञेन कागमर्गमुत्तरग
तमहा माध्मनाह न गल्लेखेव स गत्रावददिनीयानलं यद्वाधर्मं सूताजयातिन
यध्मा कूर्ध्वं तु तमनीं लो॥ ४॥ अश्वत्थावदलीयचदनं तत्र मच्छुल्लेकल्य दुर्मो ज
मूनिम्बकदंम्बूतगसु सोऽत्र नाश्वयिकी नक्षत्रं स तत्र निष्ठगुतां वनचयं धि

आळिहं गाळिता निमांशे श्वनथं सनंदनवनं कूर्चकुतमजी सं॥ ८॥ श्रीरामे
 नुसुमं न विष्णुमलयाशीनिसपाताकुमाः त्रिशोडानमहे छमन्दनजि त्रिहया
 कंठ वासादयश्यागक्षाचलवसुत्रंगमखिलं युक्तेषु गृहीतवत्सं स चेतं त्रि
 ग्रहसुमं न सहिता ८ कूर्चकुतमजी सं॥ ९॥ गंगसिन्धु कंदक विदुयम नारजसदा
 देवती महेश्वनस्तुतास्वाताचया गद्युकीः पूर्यमाणयुक्तेषु लेख समुद्रसहिता ८ कूर्च
 कुतमजी सं॥ १०॥ गंगसरगमतिरगममति गद्यतीरगमविन्दरगवर्द्धनाः गीतारगम
 २ वृणीनर्मदाकावनीसनयमहद्वितनयावर्मन्वगीदविकाः १ भियाव २

मय रगमज्जा जिनि सुता गंगमध्या रगमतम १ गमयशी गनू अ गल नि त्रि य ना गं म्ही
 नरगमदावनीः गन्धर्वा य ह र म य र ग म कु ल ग म्भ ८ कूर्चकुतमजी सं॥ ८॥ सिद्धार्थ
 दक्षियावकं सुविमलं कूर्चयुक्तेषु लेख भवमुक्तेषु यथा सुकनसता रगमजाचना
 श्रीरुं लं रिवयावदविदयुहातसमय रगमकांक्षनावीहयाः इर्धा त्रि किल नन्दतास
 समिता ८ कूर्चकुतमजी सं॥ ११॥ ०० ह्य तव सुमर्ज लाष्टक मिदं पापयश्च विच्छंसनः
 यथा सुयुगि कालिदासक विनाचूर्कयुवन्तीकृतं । यथा त ८ गृह्या नुमाहित मति

वासस्य वाक्मामृतं गगमसा गले सै गमयति दिनं या प्राति धर्मो जय ॥ १० ॥ ॐ नमः
 कालिदासविलचितं मंगलाष्टकं समाप्त ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ निवयुभद
 यनमः सर्वज्ञकीश्वरः भगवन् देवेन नायकस्य ह्येवान् संयुक्तं कामयुदं वानी
 भवन् नदस्य वाग्मयदाः वामाश्रित्य कश्च न शरभक वाधिवनास कल्लेयदा
 मएकं यथा हि मा ॥ ॥ वद्मावदयति निवाय मुयति मूर्था ग्रहानां यतिः भ
 कादवयति यमपि ह्यति कर्तुं यथा सनायति हा विस्मयः यति हविद्रुतयति भवतु

श्वतानायतिः ॐ नमः तयत यमुमनसहिता कूर्चकुत मर्मल ॥ ॥ शुभममु ॥
 रलोयाश्मु संभवत् ॥ ११ ॥ आवाट दधु ॥ अस्तमि अस्थिनी नक्षत्र ॥ दृतिजागा ॥
 सोमवाल ॥ थक्कः वमि संयुदथ द्वा नक्षत्रादं वदु कर्हि नाडन संयुदुयादा ॥

१	क	ग	म	न	प	उ	ह	वि	स्वा	वि	अ	म	य	उ	अ	य	म	पु
२	न	श	व	क	क	म	र	य	त्र	मि	न	ना	य	उ	ह	क	स्वि	ग
३	ॐ	व	वा	घ	का	ह	मि	र	म	न	मि	य	पा	ग	ह	क	स्व	नि
४	उ	वि	क	ढ	ह	हो	मू	रि	य	ग	न	मा	त	न	उ	जा	ख	तु
५	ॐ	र	कि	क	हि	उ	म	रू	पि	०	पि	त	ता	न	मि	द	मि	दि

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

म	म	म	म	म	म	म	म
म	म	म	म	म	म	म	म
म	म	म	म	म	म	म	म
म	म	म	म	म	म	म	म
म	म	म	म	म	म	म	म
म	म	म	म	म	म	म	म
म	म	म	म	म	म	म	म
म	म	म	म	म	म	म	म

सूर्य कर्तृ य नम
 मूख का सना य नम
 सिद्धि विनाय काय नम
 पत्र उह स्नाय नम
 पास ह स्नाय नम
 गृहिह स्नाय नम
 श्री नै य नम
 गजान नाय नम
 सिद्धि या नाय नम
 उह द या य नम
 शवा ह नाय नम
 गृहि ग न र ग नो थ यू का
 अथ म म म म यू का
 अथ ना दि यू का
 पत्र मा स्नाय नम
 गता ध्याना श्री मृ ग म थ
 ना त्य ना स्ध ही ता
 क धा गि री ग वा ल
 पू गि री गि किं र व ना
 नि व उ द ॥

二二三

मार्ग



सिरुः तावा

३५॥

वसु

० करसः प्रग्रमः वरिगन्धसः दिदी

सुमत



कने ई गो
दिदि के
जाकि
दुभोः द वय
जासि जात
जेयसीधम
दे १ दिदि
अ १ दिदि

पुजसरा
पनाजाल मिहत्र
सिहतावा

नायः वताय
०० ताः जजमक
साउडुः दाफो वा कवा
जालगत
धुःधुपा
०० कापका
नाः म्वा
चोकावजि
दुडुकिजाकी
जम जाउ
धेल
जम चाः वच
सिह
सुवर्धोपतिः अवशला
सिह पाल
नीसला
जात ववाजिः सदि

अथर्वः सिधम
कमलः किलरि